शेष मधुशाला

शेष मधुशाला

मधुकर वनमाली

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
335, देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ-250110

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, लेखक की अनुमति के बिना उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : 978-81-946288-0-4

सर्वाधिकार : मधुकर वनमाली
सहायक विद्युत अभियंता
1/16 स्वामी सहजानंद नगर
मुजफ्फरपुर, बिहार

मूल्य : ₹150/-

प्रथम संस्करण : मई, 2020

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
335 देवनगर, मोदीपुरम,
मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110
मोबाइल नंः 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : योगेश समदर्शी

मुद्रक : थॉमसन प्रेस

संस्कारों में
कविता का
वरदान भरने वाले
आदरणीय पिताश्री
को समर्पित

नूतन बिम्बों के रचनाकार -मधुकर 'वनमाली'

कवि का काम होता है जागरण। दूसरों की चेतना को जागाना। किंतु यह दुष्कर कार्य वही कर सकता है जो स्वयं जागृति की अवस्था में पहुँच चुका हो। तुक मिला लेना कविता नहीं होती। भावों को लिपिबद्ध कर देना भी कविता नहीं कही जा सकती। कविता वो होती है जो एक लय में प्रवाहित होती है। नदियों की तरह, हर कवि और उसकी कविता की लय और गति भी भिन्न होती है। शब्दों की झंकार, कभी तो कानों में संगीत घोलती है, कभी शब्दों की महक तन मन को महका देने का कार्य करती है।

कभी तो कवि के भाव मदिरालय में विचरण करते हैं और कभी वह पावन प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठा कर प्रकृति के चित्रों को अपने शब्दों के माध्यम से सजाता हैं, सँवारता हैं। कवि एकदम निरीह चित्रों में भरता है भावों के रंग। संवेदना के कैनवॉस पर ये भावना के रंग जब अर्थ की नव छटा को उत्पन्न करते हैं तो पाठक के हृदय से कभी आह निकलती है, कभी वाह फूट पड़ती है। कभी पाठक संवेदना से भर जाता है तो कभी आनन्द से। कभी चेहरे पर मुस्क़ान थिरकती है, तो कभी रोम-रोम रोमांचित हो जाता है। कभी आँसू की एक बूँद अनायास ही आ लुढकती है पलकों पर।

अपनी कवताओं से ऐसे ही चमत्कार करते हैं, नूतन बिम्बों के रचनाकार मधुकर 'वनमाली'। मधुकर जी की लेखनी में एक धैर्य है,

वह भाव को ले कर काग़ज पर कूद नहीं पड़ते, बल्कि पूरी संवेदना से पहले उन भावों का स्वयं मूल्यांकन करते हैं, फिर शब्दों का चयन करते हैं और फिर कविता को आने की इजाजत देते हैं, तब लेखनी लिखती है तो यूँ लिखती है-

यह जीवन एक समर सा है, पर लड़ना नहीं लाचारी है।
यह है प्रशस्त एक पुण्य पंथ, हम बढ़ने के अधिकारी हैं।
हाँ श्राप न देना शांति का, इसमें कहाँ कीर्ति हमारी है।
मुझे निज तृष्णा ही प्यारी है।

मधुकर जी की शब्द शैली अनूठी है, शब्द चयन और छंद गठन भी भव्य है। रचनाओं में लय है, गेयता है, जो इन कविताओं को मदहोश करने का गुण प्रदान करती हैं। शब्दों को तथ्यों में इतनी कुशलता से पिरौते हैं कि ऐतिहासिक घटनाएँ आपके ज़हन में एक दम से बिम्बित हो जाती हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे नव मुहावरा गढ़ रहे हों-

वह अधनंगा साधु देखो, चरखों से तोप उड़ा बैठा।
जिसको फिंकवाया गाड़ी से, दिल्ली में ध्वज फहरा बैठा।

मधुकर वनमाली द्वारा लखित यह कविता संग्रह 'शेष मधुशाला' आपको विशेष आनन्द देने वाला है, यह मैं इसको पढ़ने के बाद पूरे अधिकार से कह सकता हूँ। यदि आप को काव्य की समझ है, कविता की डीकोडिंग आप कर पाने में सक्षम हैं तो यह कविताएं अपको मदहोश करेंगी। आपको एक नूतन दर्शन और विचार से परिचित कराएंगी और साथ ही साथ आपको आनन्द से भी भर देंगी।

इतने भव्य कविता संग्रह के लिए मधुकर वनमाली साधुवाद के पात्र हैं। मैं आशा करता हूँ निकट भविष्य में उनकी लेखनी और भी चमत्कार प्रस्तुत करेगी।

-योगेश समदर्शी

(ओज कवि एवं प्रकाशक)

दो शब्द

सब से पहले गुरुजनों एवं सुधी पाठकों को प्रणाम। 'शेष मधुशाला', कविता संग्रह, का लेखन मैंने वर्ष 2018 के अंत के आस पास शुरू किया था। अब यह 2020 में 'समदर्शी प्रकाशन' से प्रकाशित हो रहा है। यह मेरी प्रथम प्रकाशित पुस्तक है सो उत्साह और व्यग्रता को तो आप लोग समझ हीं सकते हैं।

कुल पाँच सोपानों में चालीस कविताएँ संकलित हैं। अपने मृदु कटु अनुभवों के समुद्र से काव्य रूपी मोती बटोरने की जो मैंने चेष्टा की है, उस की सफलता/असफलता का निर्णय अब आप के हाथों में है। कुछ नए ढंग की हालावादी रचनाएं भी प्रस्तुत हैं, जिन पे आप की सधी प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं।

मेरे माता-पिता, गुरुजन एवं धर्मपत्नी का मुझे लेखन कार्य में अटूट सहयोग मिला है। इन लोगों की कृतज्ञता बहुमूल्य है। समदर्शी प्रकाशन के संपादक श्री योगेश 'समदर्शी' जी कि नए लेखकों को आगे बढ़ाने की सोच का मैं क़ायल हो चुका हूँ। आशा है यह साथ भविष्य में अटूट बना रहेगा।

शुभेच्छाओं सहित।

बुद्ध पूर्णिमा, 1942 शाके

-मधुकर वनमाली
भगवानपुर मुजफरपुर
email: madriff13@gmail.com

प्रथम सोपान

प्रकृति का सानिध्य

इस खंड में कविताएंः

1. हिमालय का स्वप्न
2. आओ प्यारी शीतलहर
3. वरुणालय
4. उषा का रथ
5. पाषाण कथा
6. जंगलों की राह अपनी
7. जिसने पुष्प खिलाया होगा
8. धरती ही सब से बढ़कर है

हिमालय का स्वप्न

वह श्वेत कणों से भरा हुआ।
वह हिम का सागर खड़ा हुआ।
मैं मंत्रमुग्ध सा सोच रहा,
कोई इससे भी क्या बड़ा हुआ।

वह शीतल सा घाटी समीर,
कभी बन जाता वह झंझावात।
कभी स्वर्णलता को दुलराता,
कभी जड़ समेत ले उड़ता हठात्।
मैं शांत हृदय से सुनता था,
मेरा रोम रोम था खड़ा हुआ।

मैंने देखा एक सरिता को,
जो तुंग शिखर से गिरती थी।
पथ में पाषाणों की बाधा थी,
वो फिर भी लड़कर बढ़ती थी।
मैं हत्बुद्धि सा सोच रहा,
कोई इस से लड़ क्या बढ़ा हुआ?

वो सर्पीली सी राहें थीं,
पल में चढ़ती औ उतरती थी।
जब फिसलाती पावस की रानी,
तब नीचे को वो सरकती थी।
मैं थोड़ा रुक कर चलता था,

मन ही मन थोड़ा डरा हुआ।

चीड़ों पे विमल कण पड़ते थे,
एक आभा से वो निखरते थे।
झिलमिल से उन के पत्तों पर,
थे रेशम सदृश्य तुहिन कण।
मैंने छू कर उन को देखा,
रुई के फाहों का बना हुआ।

वो बड़ी कुलांचे भरते थे,
मृग, कस्तूरी से डरते थे।
ना खोज कभी थे वो पाए,
थे जीवन भर जो भरमाए।
जो सूँघ के देखा मैंने तो,
था अलख नाभि में भरा हुआ।

जिसका था कंचन का शरीर,
रहती थी मेरे पर्ण कुटीर।
खाने को मधुरतम कंद मूल,
सुरभि सा वो भागीरथी नीर।
जब नेत्र खुले तो पाया कि,
था स्वप्न नहीं कुछ धरा हुआ।

■■

आओ प्यारी शीतलहर

दूर कहीं रेणु के देश से,
बैठी कुहरे के रथ पर।
ठहर तुषार मंडित शिखरों पर,
उतरो इस भारत भू पर।
आओ प्यारी शीतलहर।

शरद कभी की बीत चुकी है,
ठहरा हुआ हेमंत तभी से।
पीत हुआ है मधुबन देखो,
झर गए पत्ते सोनजूही के।
ऋतुपति भी तो पीछे खड़ा है,
कहीं न ले तुम को वो पकड़।
आओ प्यारी शीतलहर।

देवदारु का कोणिल मस्तक,
बाट तुम्हारी जोह रहा।
गल चुका है पिछले वसंत में,
श्वेत मुकुट वही खोज रहा।
आंचल में निज के रवि ढक कर,
आओ प्यारी शीतलहर।

तेरे स्वागत को उत्सुक है,
पालाखोरों का यह दल।

झूमेंगे हम सब गिटार पे जम,
जाए जिस दिन तिस्ता जल।
खाएंगे फिर आइसक्रीम भी,
माल रोड के पार्लर पर।
आओ प्यारी शीतलहर।

■■

वरुणालय

आओ भद्रे वरुणालय में,
क्यों हो इतनी दूर खड़ी।
आओ बिछाऊँ तेरी ख़ातिर,
शैवालों की हरी दरी।

नित्य प्रवाहित हुआ करेगी,
तू सरिता के अंतर में।
क्लेश कांति का ताप मिटेगा,
जब बुझोगी जल के अंदर में।
धुल जाए अलकों पर जो है,
अश्रु मोती की एक लड़ी।
आओ बिछाऊँ तेरी ख़ातिर,
शैवालों की हरी दरी।

यह जग पानी बिन सूना है,
विरह तेरा जलजात रहा।
हे नागमती अब पंथ न हेरो,
वह रत्न सिंधु के पास रहा।
तू स्वयं ही बन जाएगी पद्मे,
चिढ़ा करेंगी नील परी।
आओ बिछाऊँ तेरी ख़ातिर,
शैवालों की हरी दरी।

कहीं मिलेगा क्षीर का सागर,

जहाँ विरजते हैं 'वनमाली'।
शेषारूढ पीतांबर धारी,
'मधुकर' की हो जाना आली।
बुझा के सारे दीपक आना,
लिए श्रद्धा की बस गगरी।
आओ बिछाऊँ तेरी ख़ातिर,
शैवालों की हरी दरी।

■■

उषा का रथ

हिम मंड़ित शिखरों के पीछे,
प्राची में केसर के डोरे।
व्योम वाहिनी उषा का रथ भी,
चलता है बस भोरे-भोरे।

रथ के पहियों में जोड़ी है,
अलग वर्ण की सात भुजाएं।
बन कर जन जीवन का प्रहरी,
तम सेना की भीड़ हटाएं।
देखो अमल धवल गिरिवर पे,
किसने टेसू फूल निचोड़े।
व्योम वाहिनी उषा का रथ भी,
चलता है बस भोरे-भोरे।

ओस बिंदु के तले दबे थे,
अपने दूबवर देखो।
उन में भी है चेतना लौटी,
उभरा क्रांति का स्वर देखो।
लाल झंड़े का सारथी है जो,
हरे को भी अपने में जोड़े।
व्योम वाहिनी उषा का रथ भी,
चलता है बस भोरे-भोरे।

कल-कल की ये ध्वनि सुहावनी,
देखो दूर कहीं से आती।

उस रथ के पहिए धोने को,
सरिता वेगवती हुई जाती।
मुझ को भी तू साथ लिए चल,
कहे पवन देकर हिलकोरे।
व्योम वाहिनी उषा का रथ भी,
चलता है बस भोरे-भोरे।

मंगलाचरण करते विहगों को,
सुनो ये कैसे राग सुनाएं।
कुछ रहते छज्जे पर तेरे,
कई दूर देशों से आए।
यहीं बिताते ग्रीष्म ओ पावस,
शीतलहर में पर्वत छोड़े।
व्योम वाहिनी उषा का रथ भी,
चलता है बस भोरे-भोरे।

'वनमाली' का उपवन देखो,
उषा के आने से सजता है।
कली क्रोड़ से मुक्त हुआ है,
भ्रमर नाम जिसका 'मधुकर' है।
बिखराते जाता परागकण,
जो उसने गत निशा बटोरे।
व्योम वाहिनी उषा का रथ भी,
चलता है बस भोरे-भोरे।

■■

पाषाण कथा

ठोकरें खाकर जो तेरी,
पथ से ना पीछे हटा है।
आज चल कर पूछते हैं,
पत्थरों संग क्या घटा है।

हिम मंडित शिखरों के ऊपर,
दबे पड़े थे तुषार कणों से।
उर पर का वह भार न पूछो,
कटते जाते थे स्वजनों से।
ऋतु बसंत के आने से भी,
हाय कलेजा उन का फटा है।
आज चल कर पूछते हैं,
पत्थरों संग क्या घटा है।

गिरिवर की संतान भले थे,
आज पतित होते जाते थे।
पिटते जाते जो झंझावात से,
अपने भू से हटते जाते थे।

पूरा पढ़ने के लिए अपनी प्रति
आज ही खरीदें।